नए नियम में राज्य और वाचा

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय एक

नए नियम के धर्मविज्ञान का अध्ययन क्यों किया जाए?

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:20).....4

II. अभिप्रेरणा एवं अधिकार (4:40) 4

A. अभिपुष्टियाँ (5:30).....4

1. बारह प्रेरित (7:10) 4

2. प्रेरित और भविष्यद्वक्ता (10:36).....5

3. नए नियम की पुस्तकें (12:30).....6

B. स्पष्टीकरण (15:26) 6

1. अभिप्रेरणा (16:07).....6

2. अधिकार (23:10).....8

III. निरन्तरताएँ और अन्तराल (36:00) 9

A. युग (37:21) 9

1. निरन्तरताएँ (37:20).....9

2. अन्तराल (40:08).....10

B. सांस्कृतिक (45:54) 10

1. निरन्तरताएँ (46:38).....11

2. अन्तराल (49:30).....11

C. व्यक्तिगत (55:28).....12

1. निरन्तरताएँ (55:43).....12

2. अन्तराल (57:58).....12

IV. सारांश (1:02:13).....12

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 13

उपयोग के प्रश्न 16

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अन्तराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अन्तराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

प्रेरित पौलुस इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि नए नियम के धर्मविज्ञान की समझ के लिए अक्सर कठिन मेहनत करने की आवश्कता पड़ती है। (2 तीमुथियुस 2:15).

II. अभिप्रेरणा एवं अधिकार (4:40)

A. अभिपुष्टियाँ (5:30)

प्रेरित पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:16 में पवित्रशास्त्र की प्रेरणा और अधिकार को दर्शाया।

पौलुस ने कहा कि "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर-की-प्रेरणा से रचा गया है" (*थियोनियोस्टोस)*

1. बारह प्रेरित (7:10)

जब यीशु ने इस्राएल में परमेश्वर के प्रयोजनों को पूरा करने के लिए परमेश्वर के लोगों को शेष बचे हुओं के रूप में स्थापित करना आरम्भ कर दिया, तो उसने बारह शिष्यों के विशेष समूह को बुलाया।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु ने अपने शिष्यों को अन्य बचे हुओं को पवित्र आत्मा के माध्यम से उसके अनुयायियों को शिक्षा देने के लिए ठहराया। (यूहन्ना 16:13).

पौलुस वास्तविक बारहों में से एक नहीं था, परन्तु वह एक अधिकारिक प्रेरित था, और उसने उन सारी शर्तों को पूरा किया जो कि बारहों के लिए स्थापित की गई थीं। (प्रेरितों के काम 1:21-22)

पौलुस यीशु के मृतकोत्थान का गवाह था और यरूशलेम में रहने वाले प्रेरितों की ओर से स्वीकृत किया हुआ था।

2. प्रेरित और भविष्यद्वक्ता (10:36)

मसीह के सारे प्रेरित और भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के विशिष्ठ प्रकाशन के प्राप्तकर्ता थे। (इफिसियों 3:4-5)

परमेश्वर ने मसीह की कलीसिया की स्थापना प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की अधिकारिक शिक्षाओं के ऊपर की है।(इफिसियों 2:20-21)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. नए नियम की पुस्तकें (12:30)

प्रेरित पौलुस ने स्वयं नए नियम की पुस्तकों को पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के तुल्य स्वीकार किया। (1 तीमुथियुस 5:18)

प्रेरित पतरस ने भी नए नियम के लेखों को पुराने नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार के तुल्य माना। (2 पतरस 3:15-16).

बाइबल यह पुष्टि करती है कि कलीसिया के लिए नया नियम परमेश्वर की ओर से अभिप्रेरित और अधिकारिक वचन है।

B. स्पष्टीकरण (15:26)

1. अभिप्रेरणा (16:07)

नए नियम की अभिप्रेरणा के बारे में दृष्टिकोण :

- छायावादी दृष्टिकोण : पवित्रआत्मा ने बाइबल आधारित लेखकों को उसी तरह से प्रेरित किया जैसे सांसारिक कवि या संगीतकार लिखने के लिए प्रेरित होते हैं।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- यान्त्रिक अभिप्रेरणा : पवित्रआत्मा ने अनिवार्य रूप से बाइबल का टंकण करवाया, और मानवीय लेखक निष्क्रिय भाव से जो कुछ उसने कहा था, को टंकित करते गए।

- जैविक या सचेत प्रेरणा : पवित्रआत्मा ने मानवीय लेखकों के व्यक्तित्व, अनुभवों, दृष्टिकोणों और मंशाओं को भी उपयोग किया जब उसने उनके लेखों को निर्देशित किया।

पतरस ने स्वीकार किया है कि परमेश्वर के आत्मा ने पौलुस को पत्रों को लिखने के लिए प्रेरित किया, परन्तु उसने यह भी इंगित किया है कि यह अभिप्रेरणा सचेत प्रेरणा थी। (2 पतरस 3:15-16).

हमें मानवीय लेखकों और उनकी मंशाओं के बारे में सीखने के लिए अपने सभी प्रयासों को सामने लाना चाहिए।

सचेत अभिप्रेरणा नए नियम के धर्मविज्ञान के तीन स्तरों का पता लगाने के लिए हमें बाध्य करती है :

- स्पष्ट कथन : यह मूलपाठ स्वयं है और हमें नए नियम के धर्मविज्ञान के बारे में बहुत कुछ शिक्षा दे सकते हैं।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- धर्मवैज्ञानिक पूर्वधारणाएँ : हमें लेखक की पृष्ठभूमि और धर्मवैज्ञानिक मान्यताओं का अध्ययन करना है।

- अन्तर्निहित प्रयोजन : वे निहितार्थ जिनकी अपेक्षा लेखकों ने अपने श्रोताओं से उनके मूलपाठों में से ढूँढने की की।

2. अधिकार (23:10)

नया नियम हमारे लिए लिखा गया था, परन्तु हमारे लिए परोक्ष में नहीं लिखा गया था।

नए नियम का धर्मविज्ञान पूर्ण है, परन्तु आज के दिनों के मसीह के अनुयायियों के जीवनों के ऊपर अप्रत्यक्ष अधिकार है।

यदि हमें पवित्रशास्त्र के अधिकार के अधीन होना है, तो हमें किसी एक प्रसंग के मूल प्रयोजन और संदर्भ को ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. निरन्तरताएँ और अन्तराल (36:00)

A. युग (37:21)

बाइबल आधारित इतिहास का एक युग समय की ऐसी अवधि है जिसे दिव्य प्रकाशन के द्वारा स्थापित किया गया है जो इसे समय की अन्य अवधियों से अलग करता है।

1. निरन्तरताएँ (37:20)

नए नियम के दिनों और हमारे दिनों में निरन्तरताएँ :

- हम एक ही परमेश्वर की सेवा करते हैं

- हम मसीह की मृत्यु के द्वारा पाप के लिए अन्तिम प्रायश्चित के हो जाने के बाद के दिनों में रहते हैं।

- हम ऐसे समय में रह रहे हैं जब परमेश्वर का आत्मा उण्डेला गया है।

- हम उसी मिशन के साथ हैं, जो पृथ्वी के अन्तिम छोर तक जो कुछ यीशु ने हमें सिखाया को फैला रहे हैं

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. अन्तराल (40:08)

पौलुस ने कलीसिया की नींव और कलीसिया के पूरे इतिहास में अन्तर स्पष्ट किया है। (इफिसियों 2:20).

नए नियम के समयों और हमारे आज के दिनों में अन्तराल :

- प्रमाणिक आश्चर्यकर्म : हम अब आश्चर्यकर्मों को नए कलीसियाई अगुवों के अधिकार को समझने के रूप में नहीं देखते हैं

- प्रत्यक्ष आग्रह : क्योंकि यीशु के प्रेरित और भविष्यद्वक्ता अब हमारे बीच नहीं हैं इसलिए, हमें नए नियम के हमारे अध्ययन पर निर्भर रहना है।

- धर्मवैज्ञानिक महत्व : ये महत्व विशेष रूप से कलीसिया की नींव पड़ने वाले समय के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण थे।

B. सांस्कृतिक (45:54)

संस्कृति मानवीय समुदायों की ऐसी पद्धतियाँ है जो कि साझा अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के परिणामों से विकसित हुई है।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. निरन्तरताएँ (46:38)

प्रत्येक मानवीय संस्कृति एक ही संसार में विद्यमान है। (सभोपदेशक 1:9)

जब हम सतही भिन्नताओं के नीचे देखते हैं, तो हम हमारे समयों और नए नियम के समयों के मध्य कई सदृश गुणों को पाते हैं।

2. अन्तराल (49:30)

हमारे आज के दिनों में और नये नियम के समयों में कई सांस्कृतिक दृष्टिकोण बहुत ज्यादा भिन्न हैं।

हमारे आज के दिनों में और नये नियम के समयों में अन्तराल :

- नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया था।

- पहली सदी के साहित्यिक सम्मेलनों और नए नियम के लेखकों के द्वारा इब्रानी और यूनानी के संस्करणों का प्रभाव।

- राजनैतिक, आर्थिक और उन दिनों की विस्तृत सामाजिक प्रथाओं की अज्ञानता

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. व्यक्तिगत (55:28)

1. निरन्तरताएँ (55:43)

नए नियम और हमारे आज के दिनों के सभी प्राणी एक जैसे ही लोग थे। (रोमियों 9:2-4)

व्यक्तिगत निरन्तरताएँ हमारे लिए नए नियम के लेखकों, श्रोताओं और चरित्रों के प्रति हमारी समझ को अनुभव करने में अपेक्षाकृत आसान बना देती हैं।

2. अन्तराल (57:58)

नया नियम अक्सर विशेष तरह के लोगों को सम्बोधित करता है जो आज के लोगों से इतने भिन्न हैं कि कई बार हम उनसे उचित सम्पर्क स्थापित करने में संघर्ष करते हैं।

नए नियम के दिनों में लोगों को नए नियम के धर्मविज्ञान का उसी तरीके से पालन करना था, जैसा उनके लिए उचित था।

IV. सारांश (1:02:13)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. नए नियम की अभिप्रेरणा और अधिकार के समर्थन में बाइबल में कौनसी पुष्टियाँ पाई जा सकती हैं?

2. नए नियम की अभिप्रेरणा के विषय में तीन दृष्टिकोण कौन-कौनसे हैं?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. हमारे समयों और नए नियम के समयों के बीच उपस्थित समय या युग संबंधी निरन्तरताओं और अन्तरालों का वर्णन कीजिए।

4. हमारे और नए नियम के मूल पाठकों के बीच सांस्कृतिक निरन्तरताओं और अन्तरालों के प्रभाव पर ध्यान देना क्यों सहायक है?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. हमारे समयों और नए नियम के समयों के बीच व्यक्तिगत निरन्तरताएँ और अन्तराल कौन-कौनसे हैं?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. 2 तीमुथियुस 2:15 में, प्रेरित पौलुस ने दर्शाया कि पवित्रशास्त्र को समझने में परिश्रम करना पड़ता है। नए नियम के धर्मविज्ञान को समझने के प्रयासों में आप कैसे प्रोत्साहित रहते हैं?
2. नया नियम आपके लिए कैसे आधिकारिक हो सकता है जब यह प्रत्यक्ष रूप से आपके लिए नहीं लिखा गया है? आप इस बात के प्रति क्यों आश्वस्त हैं कि पवित्रशास्त्र आप पर लागू होता है?
3. परमेश्वर ने सचेत अभिप्रेरणा के द्वारा पवित्रशास्त्र के शब्दों को रचा। यह दृष्टिकोण किस प्रकार इस बात की पुष्टि करने में सहायक है कि पवित्रशास्त्र सच्चा और विश्वसनीय है?
4. ऐसे कौनसे विशेष तरीके हैं जिनमें आप नए नियम की पृष्ठभूमि का अध्ययन करने में दूसरों को उत्साहित कर सकते हैं और उनकी सहायता कर कर सकते हैं?
5. जब आप नए नियम की व्याख्या करते हैं और उसे लागू करते हैं, तो हमारे समय और नए नियम के समयों के सांस्कृतिक अन्तरालों पर विजय पाने के लिए आप कौनसी विधियों का प्रयोग कर सकते हैं?
6. नए नियम के लेखकों ने प्रायः अपने पाठकों से अपेक्षा की थी कि वे अपने अप्रत्यक्ष उद्देश्यों को समझें। अपनी परिस्थितियों में नए नियम के लेखनों के आशयों को समझने के लिए आप कौनसे कदम उठा सकते हैं?
7. नए नियम के समयों और वर्तमान समय के बीच पाई जाने वाली युग या समय-संबंधी, सांस्कृतिक, और व्यक्तिगत निरन्तरताओं को बताइए और उनका वर्णन कीजिए। क्या ये निरन्तरताएँ आपको नए नियम के समय में रहे मसीहियों से जुड़ा हुआ महसूस करने में सहायता करती हैं? अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिए।
8. आप किस प्रकार बाइबल की प्रासंगिकता की अपनी प्रतिबद्धता का बचाव कर सकते हैं, जबकि हमारे समय और नए नियम के समय के बीच अन्तराल पाए जाते हैं?
9. वर्तमान समय और नए नियम के समय के बीच निरन्तरताओं और अन्तरालों के बारे में जानकारी सुसमाचार-प्रचार के लिए किस प्रकार सहायक है? एक उदाहरण दीजिए कि आप किस प्रकार इन निरन्तरताओं और अन्तरालों का सुसमाचार-प्रचार के लिए इस्तेमाल करेंगे।
10. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org